5`

''सारा इस्राएल उद्धार पाएगा?''

(11:25, 26क)

11:25-36 का अध्ययन पूरी तरह से करने से पहले हमें उस जटिल भाषा पर ध्यान देने की आवश्यकता है, जिससे यह आरम्भ होता है:

> हे भाइयो, कहीं ऐसा न हो, कि तुम अपने आप को बुद्धिमान समझ लो; इसलिए मैं नहीं चाहता कि तुम इस भेद से अनजान रहो, कि जब तक अन्यजातियां पूरी रीति से प्रवेश न कर लें, तब तक इस्राएल का एक भाग ऐसा ही कठोर रहेगा और इस रीति से सारा इस्राएल उद्धार पाएगा (आयतें 25, 26क)।

मैं इन आयतों को कुछ समझ होने के साथ देखता हूं। कॉलेज से ग्रेजुएट होने पर मैंने ओक्लाहोमा सिटी की एक देहाती मण्डली के लिए प्रचार करना आरम्भ किया। इलाके की कलीसियाओं के प्रचारक संगति और विचार-विमर्श के लिए महीने में एक बार इकट्ठा होते थे। उनकी मीटिंग में मैं सबसे छोटा प्रचारक था। एक मीटिंग के दौरान मुझे अगली मीटिंग में रोमियों 11:25, 26 पर बोलने के लिए कहा गया। अनुभवी सुसमाचार प्रचारकों के सामने वचन पेश करने की बात से मुझे घबराहट हो रही थी। मैंने बहुत अध्ययन किया और काफ़ी देर तक प्रार्थना करता रहा। उस प्रस्तुति की मुख्य बात जो मुझे याद है वह यह है कि समूह के अधिकतर लोग उस बात से जो मैंने कहनी थी सहमत नहीं थे। उससे उभरने के लिए मुझे कुछ समय लगा और अब मैं फिर से उसी कठिन और विवादास्पद पद को देख रहा हूं!

रोमियों 11:25, 26 के संदर्भ में धार्मिक संसार के कई लोग ''अन्यजातियां पूरी रीति से'' की व्याख्या ''पूरी अन्यजातियां'' के रूप में करते हैं। उनका मानना है कि परमेश्वर के मन में अन्यजातियों की निश्चित संख्या को परिवर्तित करना है। फिर वह गिनती पूरी हो जाने पर, उनका अनुमान यहूदियों के पूरे मनपरिवर्तन का है (''इस्राएल का सारा घराना उद्धार पाएगा'')। इनमें से अधिकतर लोगों का मानना है कि यह यादगारी घटना द्वितीय आगमन के समय या उसके आस-पास घटित हुई होगी।

इस पाठ की तैयारी करते हुए मुझे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि यह व्याख्या को कितने अधिक लोग मानते हैं। मुझे यह तो मालूम था कि प्रिमिलेनियलिस्टों (हज़ार वर्ष की राज्य की शिक्षा देने वालों) ने इस दृश्य को ''अन्त समयों'' की अपनी शिक्षा के भाग के रूप में मान लिया था। मुझे यह भी ध्यान था कि प्रभु की कलीसिया के सदस्यों द्वारा लिखी कुछ पुरानी टीकाओं में उनकी कुछ अवधारणाओं की झलक मिलती है।[1] लेकिन मुझे हैरानी थी कि हाल ही के कई टीकाकारों, यहां तक कि जो हज़ार वर्ष के राज्य की शिक्षा देने वाले गुटों से जुड़े भी नहीं हैं, मानते हैं कि 25 और 26 आयतों में पौलुस एक रहस्य (''भेद'' बता रहा था) जो पहले कभी प्रकट नहीं किया गया था:

प्रभु के दोबारा आने से थोड़ा पहले यहूदियों का सामूहिक परिवर्तन होता।

अबिलेन क्रिश्चियन कॉलेज के मेरे एक शिक्षक को कठिन वचन को पढ़कर क्लास को बताना अच्छा लगता था, ''मैंने तुम्हें ठूंठ दिखा दिया है। अब आपको निर्णय लेना है कि आप इसके आस पास हल चलाओगे या इसे निकाल दोगे।''''घमण्ड का कोई कारण नहीं'' (11:13-24)'' पाठ में मैंने आपको रोमियों 11:25, 26 के ठूंठ की एक झलक दे दी है, अब आपको देखना है कि इसका क्या करना है।

नकारने वाली भूमिकाएं

भूमिका: ''पौलुस ने एक नया विषय बताया''

अपने वचन पाठ के बारे में नासमझी के कुछ कारणों की ओर ध्यान दिलाते हुए आरम्भ करते हैं। समस्या तब आरम्भ होती है, जब व्याख्या करने वाले अध्याय 11 को शेष अध्याय से अलग करते हैं, जैसे कि पौलुस कोई नया विषय बता रहा हो। आयत 25 ऐसे विचार को छितरा देती है क्योंकि अगली बात को पिछली से जोड़ते हुए इसमें ''इसलिए'' (*gar*) जोड़ा गया है। आयत 25 वाले ''भाईयों वही अन्यजाति मसीह हैं जिनसे पौलुस बात कर रहा था'' (आयत 13)। ये प्रेरित अभी भी अन्यजातियों को ''घमण्ड'' या ''अविश्वास'' न करने (आयतें 18, 20) ''अपने आपको बुद्धिमान'' न समझें (आयत 25)।

25 और 26 आयतों से अगली आयतों पर ध्यान दें, तो आप पाएंगे कि पौलुस ने अध्याय के पहले भाग में विचार की जिस रेखा से आरम्भ किया था उसी को जारी रखा (देखें आयतें 11-14)। यहूदियों का ठुकराया जाना (परमेश्वर द्वारा) अन्यजातियों के ग्रहण किए जाने (परमेश्वर द्वारा) का कारण था। यह यहूदियों को यीशु को ग्रहण करने के लिए झंझोड़ने के उद्देश्य से था, जिससे यहूदी लोगों को ग्रहण किया जाता था (परमेश्वर द्वारा)। अध्याय 11 के अन्तिम भाग में विचार की इस रेखा में बताया गया है। उदाहरण के लिए यह देखने के लिए कि यह शृंखला क्या बताती है- आयतें 30 और 31 पढ़ें:

यहूदियों का आज्ञा न मानना
(परमेश्वर द्वारा यहूदियों को ठुकराए जाने का कारण)

अन्यजातियों पर दया दिखाया जाना
(परमेश्वर ज्ञरा अन्यजातियों को ग्रहण किया जाना)

यहूदियों पर दया दिखाया जाना
(परमेश्वर द्वारा यहूदियों को ग्रहण किया जाना)

भूमिका: ''भेद का अर्थ वह रहस्य है जो पहले कभी प्रकट नहीं किया गया।''

समस्या ''भेद'' शब्द के बारे में उलझन के साथ बनी रहती है। ''भेद'' के लिए अंग्रेज़ी शब्द ''mystery'' यूनानी शब्द (*musterion*) का लिप्यांतर है। बाइबली उपयोग में मुस्टेरियन का अर्थ वह नहीं जो अज्ञात है, बल्कि वह है जो यदि परमेश्वर द्वारा प्रकट न किया जाता तो पता न चलता (देखें 1 कुरिन्थियों 2:7; इफिसियों 3:9)। डब्ल्यू. ई. वाईन ने लिखा है, ''साधारण अर्थ में 'भेद' का अर्थ रोका गया ज्ञान है; वचन के अनुसार इसका महत्व प्रकट की गई सच्चाई है।''[2] नये नियम में, ''भेद'' का सम्बन्ध अधिकतर संसार में मसीह को भेजने के लिए परमेश्वर की योजना के प्रकाशन से और इस योजना में शामिल सब बातों से जुड़ा है (देखें कुलुस्सियों 1:27; 2:2; 1 तीमुथियुस 3:16)। रोमियों के नाम अपने पत्र का समापन करते हुए पौलुस ने कहा:

> अब जो तुम को मेरे सुसमाचार अर्थात यीशु मसीह के विषय के प्रचार के अनुसार स्थिर कर सकता है, उस *भेद* के प्रकाश के अनुसार जो सनातन से *छिपा रहा,* परन्तु अब *प्रगट होकर* सनातन परमेश्वर की आज्ञा से भविष्यवाणियों की पुस्तकों के द्वारा सब जातियों को बताया गया है, कि वे विश्वास से आज्ञा मानने वाले हो जाएं (16:25, 26)।

अधिकतर लेखक *मुस्टेरियन* फिर रोमियों 11:25 में वे इस शब्द को वह रहस्य बनाना चाहते हैं, जो पौलुस अपने पाठकों को बताने को था। यह रहस्य जो न केवल कभी पहले प्रकट किया गया और न दोबारा कभी किया जाएगा। वचन में कहीं और दिया गया, यहूदियों का सामूहिक मन परिवर्तन कहा जाता है।

इसके बजाय मैं यह सुझाव देता हूं कि हमारे वचन पाठ में *मुस्टेरियन* इतना रहस्यमयी नहीं है। जैसा कि पहले कहा गया है पौलुस क्योंकि नये विषय का परिचय नहीं दे रहा था; इसके बजाय वह अपने विचार की मुख्य रेखा को जारी रख रहा था। मेरा मानना है कि संदर्भ में *मुस्टेरियन* का अर्थ अन्यजातियों को ग्रहण करके यहूदियों को जलन दिलाकर (तीव्र इच्छा) उन्हें उद्धार दिलाने की परमेश्वर की अद्‌भुत योजना का प्रकाशन है। ध्यान दें कि कई बार पहले चर्चा की गई शृंखला में आयतें 25 और 26 कैसे फिट बैठती हैं:

यहूदियों के एक भाग का कठोर होना
(परमेश्वर द्वारा यहूदियों को ठुकराना)

↓

अन्य जातियों की पूर्णता
(परमेश्वर ज़रा अन्यजातियों को ग्रहण किया जाना)

↓

सारे इस्राएल का उद्धार
(परमेश्वर द्वारा यहूदियों को ग्रहण किया जाना)

कोई यह आपत्ति करेगा कि रोमियों 11:26 के बारे में यह व्याख्या *मुस्टेरियन* का अर्थ ऐसा

कर देगी, जिसे पौलुस ने पहले ही प्रकट कर दिया था, न कि कोई नई सच्चाई। नये नियम में जहां *मुस्टेरियन* शब्द का इस्तेमाल हुआ है उन आयतों को देखें तो आप पाएंगे कि पौलुस ने आम तौर पर *मुस्टेरियन* का इस्तेमाल मसीह के लिए किया, जो निश्चय ही उसके पाठकों के लिए ''नया विषय'' नहीं था।

दूसरे यह विरोध करेंगे कि रोमियों 11:25, 26 की व्याख्या का मेरा ढंग इतना नाटकीय नहीं है कि *मुस्टेरियन* शब्द को प्रमाणित करता हो। पौलुस ने *मुस्टेरियन* के अर्थ का इस्तेमाल कई विषयों के सम्बन्ध में किया, जिसे कई लोग ''अनाटकीय'' मान सकते हैं, जैसे कि मसीह और कलीसिया के बीच का सम्बन्ध (इफिसियों 5:32)। सच्चाई यह है कि परमेश्वर के दिमाग में पौलुस की परमेश्वर की प्रेरणा से मिली समझ, परमेश्वर द्वारा अन्यजातियों को ग्रहण करने से होने वाले यहूदियों के ठुकराव को और यहूदियों को ग्रहण करने से अन्यजातियों के होने वाले ठुकराव अद्‌भुत नहीं, बल्कि नाटकीय हैं! विलियम हैंड्रिक्सन ने लिखा है, ''क्या शब्दों के लिए यह बहुत अद्‌भुत नहीं है? ... अन्यजातियों और इस्राएल के उद्धार के बीच की निर्भरता ही ईश्वरीय 'भेद' का सार है।''[3]

भूमिका: यहूदी आज भी ''परमेश्वर के चुने हुए लोग'' हैं।

इस्राएल के साथ आज के समय परमेश्वर के साथ सम्बन्ध की गलतफहमी से समस्या और गहरा जाती है। रोमियों 11:28ख, 29 को इस पुष्टि के रूप में लिया जाता है कि यहूदी आज भी परमेश्वर के चुने हुए लोग हैं। इस्राएल के साथ परमेश्वर के सम्बन्ध के सामान्य विषय पर ''परमेश्वर और इस्राएल'' लेख में इस्राएल के साथ परमेश्वर के सम्बन्ध पर चर्चा हुई थी और ''परमेश्वर की महिमा हो! (11:25-36)'' 28 और 29 आयतों पर चर्चा की गई है। अपने अध्यायों में हमने बार-बार ज़ोर दिया है कि यहूदी अब परमेश्वर पर कोई विशेष दावा नहीं कर सकते। एक जाति के रूप में वे अब उसके विशेष लोग नहीं हैं।

जिन स्थितियों से बचना आवश्यक है

प्रिमिलेनियल स्थिति

रोमियों 11:25, 26 उन आयतों में से हैं, जिनके बारे में कोई उससे, जो ये कहती हैं अधिक आश्वस्त हो सकता है। पहले तो मैं यह दावा करता हूं कि *ये आयतें* वह नहीं सिखाती जो प्रिमिलेयनिस्ट कहते हैं कि यह सिखाती है।

प्रिमिलेयनिस्ट का एक दृश्य कुछ इस प्रकार से होता है:[4] जब यीशु पृथ्वी पर आया था, तो उसका इरादा यरूशलेम में एक भौतिक राज्य स्थापित करने का था, पर यह यहूदियों द्वारा उसे राजा के रूप में स्वीकार किए जाने पर निर्भर था। यह भविष्यवाणी की गई थी कि यहूदी यीशु को स्वीकार कर लेंगे, पर उन्होंने राजा के रूप में यीशु को नकारकर परमेश्वर की योजना पर पानी फेर दिया। यहूदियों द्वारा अन्त में यीशु को स्वीकार किए जाने तक अस्थाई प्रबन्ध के रूप में कलीसिया की स्थापना कर दी गई। यहीं पर हमारा वचन पाठ आता है। प्रिमिलेयनिस्टों का कहना है कि एक दिन आएगा, जब यहूदी यीशु को स्वीकार *कर* लेंगे। (कई प्रिमिलेयनिस्टों का मानना है कि सभी यहूदी मुर्दों में से जिलाए जाएंगे और फिर वे मसीह में परिवर्तित होंगे। इसके अलावा वे यह भी

सिखाते हैं कि यह सब नये यहूदी परिवर्तित ज़बर्दस्त सुसमाचारीय बल होगा।) उनका दावा है कि यह यहूदी नवजीवन पृथ्वी पर मसीह के वापस आने का पहला कदम होगा, जब वह संसार में अपना राज्य स्थापित करेगा।

कहानी की इस जटिल रेखा में कमजोरियों की कमी नहीं है।[5] यीशु सांसारिक राज्य स्थापित करने के लिए *नहीं* आया था (देखें यूहन्ना 18:36)। यहूदी लोग यीशु को सांसारिक राजा के रूप में स्वीकार करने को तैयार *थे* (देखें यूहन्ना 6:15) पर वे उसे अपने *आत्मिक* राजा के रूप में मानने को तैयार नहीं थे (रोमियों 9:32, 33 पर टिप्पणियां देखें)। कलीसिया बाद में आया विचार या ''अस्थाई माप'' *नहीं* था (देखें इफिसियों 3:10, 11)। कलीसिया वह राज्य है, जिसे स्थापित करने के लिए यीशु आया था (मत्ती 16:18, 19 में देखें कि ''कलीसिया'' और ''राज्य'' का इस्तेमाल एक दूसरे की जगह पर कैसे किया गया है)। तब (या अधिकतर) यहूदियों द्वारा यीशु को एक दिन ग्रहण किए जाने की बात पर एक सवाल पूछा जाना आवश्यक है कि यदि प्रिमिलेनियम शिक्षा के अनुसार यहूदियों ने यीशु को स्वीकार न करके परमेश्वर के उद्देश्य को ठुकरा दिया, तो हम पक्का कैसे कह सकते हैं कि वे फिर से यीशु को ठुकराकर भविष्य में बनाई जाने वाली योजना को नहीं नकारेंगे?

प्रिमिलेनियलिस्टों यानी हज़ार वर्ष के राज्य की शिक्षा देने वालों द्वारा रोमियों 11:25, 26 के इस्तेमाल की और कमजोरियां भी हो सकती हैं। उदाहरण के लिए यदि (जैसा कि कई लोग सिखाते हैं) यहूदियों ने अपने सामूहिक परिवर्तन के बाद एक बड़ी सुसमाचारीय शक्ति बनना है, तो फिर वे ''पूरी'' अन्यजातियों में प्रचार करने के लिए किसके पास जाएंगे (सब अन्यजातियां जिनका उद्धार हो जाएगा) जिन तक पहले ही पहुंचा जा चुका है? बेशक सबसे बड़ी कमज़ोरी यह आयत वह नहीं सिखाती जो सिखाने का दावा करते हैं। आगे हम इसी पर चर्चा करेंगे।

प्रसिद्ध स्थिति

जैसा कि मैंने इस पाठ के परिचय में कहा था, कई लेखक जो प्रिमिलेनियलिस्टों की शिक्षा से सहमत नहीं हैं, उनका मानना है कि हमारा वचन पाठ यह सिखाता है कि यहूदियों का सामूहिक मन परिवर्तन होगा। उन्हें भविष्य के किसी दिन ऐसा होने की उम्मीद है (सम्भवतया प्रभु के वापस आने से थोड़ा पहले) जब अन्यजातियों की एक निश्चित संख्या मसीही बन जाएगी। किसी भी हाल में यह काम कठिन है, इसलिए यीशु के पास आने वाले हर यहूदी की कल्पना करने के लिए इन लेखकों से अधिक ''सारा इस्राएल'' को इसी तरह इस वाक्यांश में मिला लेते हैं। वे ''बहुत बड़ी संख्या,'' ''यहूदियों की बहुत बड़ी भीड़,'' या ''पूरा इस्राएल'' की बात करते हैं।

यह अद्भुत घटना *कैसे* घटेगी यह स्पष्ट नहीं है। अधिकतर लोग इससे सहमत हैं कि यह *विश्वास* के आधार पर होना है (रोमियों 3:30), पर बहुत जो यह अनुमान लगाने को तैयार हैं कि अविश्वास के हज़ार वर्ष उन सब यहूदियों को यीशु में विश्वास करने को कौन सी बात प्रेरित करेगी। एक टीकाकार ने सुझाव दिया है कि मसीहा की राह देखते सदियों से निराश यहूदी यीशु को नई नज़र से देखना चाहेंगे। परन्तु कई लेखक केवल यही कहते हैं कि ''कैसे'' वाला भाग ''भेद'' का भाग है।

''पूरी रीति'' शब्द के अर्थ ''पूरी संख्या'' के सम्बन्ध में मैं यह मानने को तैयार हूं कि

सर्वशक्तिमान परमेश्वर चाहे तो यह जान सकता है कि अन्यजातियों की कितनी संख्या बचाई जाएगी। इसके अलावा यीशु के अधिकतर अनुयायियों की तरह यहूदियों के इतनी बड़ी संख्या में मसीही बन जाने पर मैं रोमांचित हो उठूंगा, परन्तु मैं नहीं मानता कि रोमियों 11:25, 26 में ऐसी कोई अवधारणा दिखाई गई है। इस निष्कर्ष पर पहुंचने के मैं कई कारण बताता हूं।

(1) *वाक्यांश का एक बार इस्तेमाल यह नहीं बताता कि कोई सच्चाई कैसे वापस की जाती है।* एक प्रसिद्ध व्याख्या के अनुसार 25 और 26 आयतों में पौलुस द्वारा सच्चाइयों को न तो बाइबल में पहले कभी प्रकट किया गया और न दोबारा बताया गया है। पवित्र शास्त्र सच्चाई को ऐसे स्थापित *नहीं* करता है। बाइबल की बुनियादी सच्चाइयां वचन की कई परिस्थितियों में परमेश्वर की प्रेरणा के द्वारा दोहराकर स्थापित की गई थीं।

किसी अस्पष्ट वचन में कोई बात अलग करके उसे कुछ भी अर्थ दे देने से कई गलत शिक्षाएं बनी हैं। उदाहरण के लिए प्रिमिलेयनिस्टों ने एक अत्यधिक सांकेतिक पुस्तक की एक बात से ''एक हज़ार वर्ष'' वाक्यांश ले लिया (प्रकाशितवाक्य 20:1-5) और उस प्रतीकात्मक भाषा के आस-पास घूमने वाली एक धर्म शिक्षा बना ली। इसी प्रकार एक समूह में ''मरे हुओं के लिए बपतिस्मा'' (1 कुरिन्थियों 15:29) टेढ़े वाक्यांश से लेकर उन लोगों के संबंध में जानकारी इकट्ठा करने के लिए एक अविश्वसनीय जटिल प्रबन्ध बना लिया और फिर बपतिस्मा देने लगे। पुन: मैं ज़ोर देता हूं सच्चाई को स्थापित करने का ढंग यह *नहीं* है।

(2) *संदर्भ ऐसे किसी विचार का संकेत नहीं देता।* मैं सुझाव देता हूं कि पिछली आयतों में परमेश्वर एक दिन सब यहूदियों को बचा लेगा। हैंड्रिक्सन ने टिप्पणी की है:

> पाठक को इस्राएलियों के सामूहिक मन परिवर्तन के विचार के लिए तैयार नहीं किया गया है। इसके बिल्कुल उलट *बचे हुओं* के किसी भी युग (भूत, वर्तमान और भविष्य) में उद्धार पर ज़ोर देता है। यदि रोमियों 11:26 में यहूदियों के सामूहिक मन परिवर्तन की बात करता है यह नहीं लगेगा कि जैसे पौलुस कह रहा हो, ''जो कुछ मैंने तुम्हें पहले बताया उसे भूल जाओ।''[6]

रोमियों 9-11 में दोबारा पढ़ें कि पौलुस यहूदियों के बारे में क्या कह रहा था। पौलुस के मन में ''बड़ा शोक और अफ़सोस रहता था'' क्योंकि उसके अपने भाई, यानी शरीर के अनुसार उसके भाई-बहन खोए हुए थे (9:1-3; 10:1)। वह ''उनमें से कई एक का उद्धार'' कराने को तरसता था (11:14)। उसने ज़ोर देकर कहा कि यदि वे अविश्वास में बने न रहते, तो उन्हें परमेश्वर की योजनाओं और मंशाओं में फिर से शामिल किया जा सकता था (''काटा''; 11:23)। उसने कहीं ज़रा सा संकेत भी नहीं दिया कि भविष्य में सब यहूदी अपने अविश्वास को त्याग देंगे।

(3) *यह शिक्षा ''यहूदी समस्या'' का कोई समाधान नहीं देती।* तीसरा रोमियों 11:25, 26 पर प्रसिद्ध शिक्षा वास्तव में उससे जुड़ी नहीं है जिसे हम ''यहूदी समस्या'' कह रहे हैं, यानी यह कि परमेश्वर ने इस्राएल जाति पर अपनी प्रतिज्ञाओं को छोड़ दिया है या नहीं। आम लोगों द्वारा मानी जाने वाली इस शिक्षा की वकालत करने वाले यह ज़ोर देते हैं कि उनकी व्याख्या यह साबित करती है कि परमेश्वर वफ़ादार है क्योंकि वह मसीह के वापस आने से बिल्कुल पहले की पीढ़ी में रह रहे सब यहूदियों (या ''बड़ी संख्या'') को बचा लेगा, परन्तु उन असंख्य यहूदियों का क्या होगा जो

उस अन्तिम पीढ़ी से पहले मर गए और अविश्वास में मर जाएंगे? यह ध्यान दिलाया गया है कि ''सारा इस्राएल 'मसीह के बाहर मरने वाली कई पीढ़ियों के बाद अन्तिम पीढ़ी की जिज्ञासा की बात कर रहा है।' ''[17] ''यहूदी समस्या'' के बारे में जिम मैक्गुइगन ने लिखा है:

> वह [पौलुस] जो सुझाव हमें नहीं देता वह यह है: ''आपकी समस्या का उत्तर अब से कुछ हज़ार वर्षों बाद दिया जाएगा। जब परमेश्वर यहूदियों की पूरी पीढ़ी को विश्वास में लाएगा, जिस कारण उनका उद्धार होगा।'' यह तो कोई उत्तर नहीं होगा। ... ऐसा प्रत्युत्तर उस पीढ़ी के पहले के निकाले गए यहूदियों की समस्या का हल नहीं होगा।[18]

रोमियों 9–11 में बताई गई ''यहूदी समस्या'' सीधे तौर पर पौलुस की पीढ़ी के यहूदियों की है। ज्वलंत प्रश्न यह था कि परमेश्वर *उन* यहूदियों के साथ न्याय करेगा या नहीं। प्रभु द्वारा हज़ारों वर्षों बाद भविष्य में उनके लिए कुछ करना या न करना उनके लिए किसी काम का नहीं होना था।

(4) *बड़े पैमाने पर यहूदी मनपरिवर्तन का विचार बाइबल की किसी और शिक्षा के विपरीत है।* बाइबल की व्याख्या का मूल नियम यह है कि किसी भी अस्पष्ट वचन को लेकर उसकी व्याख्या ऐसे नहीं की जानी चाहिए, जिससे यह बाइबल की किसी और स्पष्ट शिक्षा के उलट हो। जैसा कि पहले कहा गया है कि यह विचार कि परमेश्वर *सब* (या अधिकतर) यहूदियों को बचा लेगा पौलुस की स्पष्ट शिक्षा के विरुद्ध है कि परमेश्वर थोड़े यहूदियों को ही बचाएगा (9:27; 11:5)।

इसके अलावा इस पर विचार करें, यदि यहूदियों की ''भरपूरी'' (*pleroma*) (11:12) का अर्थ यीशु के वापस आने से थोड़ा पहले अधिकतर यहूदियों का उद्धार है तो यह मानना तर्कसंगत है कि ''अन्यजातियां पूरी रीति [*pleroma*]'' (आयत 25) का अर्थ उस समय से थोड़ा पहले अधिकतर अन्यजातियों के उद्धार की बात है जब अधिकतर यहूदियों का उद्धार होगा। ऐसा निष्कर्ष लूका 18:8ख में यीशु के प्रश्न को बकवास बना देगा कि ''मनुष्य का पुत्र जब आएगा, तो वह क्या पृथ्वी पर विश्वास पाएगा?''

निश्चय ही हम में से अधिकतर लोग पृथ्वी के अधिकतर (यहूदियों और / या अन्यजातियों) के उद्धार पाने की सम्भावना से प्रसन्न होंगे। यीशु ने कहा कि ऐसा *नहीं* होगा। उसने कहा, ''क्योंकि बुलाए हुए तो बहुत हैं, परन्तु चुने हुए *थोड़े* हैं'' (मत्ती 22:14)। पहाड़ी उपदेश में यह संकेत देते हुए कि जीवन के मार्ग पर चलने वाले लोग थोड़े होंगे, उसने दो मार्गों के बारे में बताया:

> संकेत फाटक से प्रवेश करो। क्योंकि चौड़ा है वह फाटक और चाकल है वह मार्ग जो विनाश को पहुंचाता है; और बहुतेरे हैं जो उससे प्रवेश करते हैं। क्योंकि संकेत है वह फाटक जो और सकरा है वह मार्ग जो जीवन को पहुंचाता है, और *थोड़े* हैं जो उसे पाते हैं (मत्ती 7:13, 14)।

प्रसिद्ध स्थिति को नकारने के और भी कारण बताए जा सकते हैं। उदाहरण के लिए रोमियों 11:25, 26 का यह विचार *कौमी* उद्धार की शिक्षा के रूप में लिया जा सकता है। उद्धार के बारे में परमेश्वर ने मनुष्यजाति के साथ कभी कौमी या सामूहिक आधार पर व्यवहार नहीं किया, बल्कि *व्यक्तिगत* आधार पर ही किया है। इसलिए हमें इस विचार को स्वीकारना आवश्यक है कि

रोमियों 11:25, 26 यह सिखाता है कि द्वितीय आगमन से थोड़ा पहले, ''पूरा इस्राएल'' उद्धार पाएगा।

बिगड़ी हुई स्थिति

अधिकतर लेखकों ने इस प्रसिद्ध विचार में एक समस्या देखी है कि यहूदियों का सामूहिक मन परिवर्तन *कैसे* होगा। जैसा कि बताया गया है कि बहुत से लोग ''भेद'' में केवल ''कैसे'' जोड़ देते हैं। परन्तु हाल ही के वर्षों में कलीसियाओं के लेखकों की बढ़ती संख्या ने यह ज़ोर दिया है कि आज के यहूदी यीशु पर विश्वास किए बिना व्यवस्था को मानकर उद्धार पा सकते हैं समस्या को ''सुलझाने'' का प्रयास किया है। वे ''अन्यजातियों के उद्धार के रास्ते'' की ओर ''यहूदियों के उद्धार के रास्ते'' की बात करते हैं। वे कहते हैं अन्यजातियों के लिए ''मसीह की वाचा'' और यहूदियों के लिए ''तौरेत की वाचा'' है। वे ज़ोर देते हैं कि ''*इस* प्रकार'' सारा इस्राएल उद्धार पाएगा।

मैंने आपको चेताने के लिए सबसे पहले इस भयभीत करने वाली स्थिति को बताया था। ट्रुथ फॉर टुडे वर्ड मिशन स्कूल के छात्रों को मालूम है कि यह पौलुस के संदेश का कितना बिगाड़ है। पौलुस ने रोम में यहूदियों और अन्यजातियों दोनों के एक ही तरह से *खोए होने* और एक तरह से *उद्धार पाने* को बताया। परमेश्वर ने उद्धार के दो नहीं बल्कि एक ही तरीका बताया है। यीशु ने कहा, ''मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता'' (यूहन्ना 14:6)। 11:25, 26 के आस-पास हमें *दो* ''जैतून के पेड़'' नहीं मिलते, जिन्हें परमेश्वर आशीष देगा (एक यहूदियों के लिए और दूसरा अन्यजातियों के लिए) बल्कि केवल *एक* ही मिलता है।

विचार करने की सम्भावनाएं

हमने उस पर चर्चा की है जो वचन *नहीं* कहता। अब उस पर चर्चा करेंगे जो यह *कहता* है।

उत्तर देने के लिए एक प्रश्न

एक प्रश्न जो हमारी व्याख्या को प्रभावित करेगा वह यह है कि *''आयत 26 में 'इस्राएल' किसे कहा गया है?''* बीते समयों में अधिक प्रचलित व्याख्याओं में से एक यह थी कि आयत 26 में ''इस्राएल'' का अर्थ आत्मिक इस्राएल अर्थात कलीसिया है।[9] यह हो सकता है। एक और जगह पौलुस ने कलीसिया को ''इस्राएल'' कहा (गलातियों 6:16) और यह विचार अन्य जगहों पर बाइबल की शिक्षा का उल्लंघन नहीं है, परन्तु इस स्थिति में बुनियादी कमज़ोरी है। पौलुस ने इस भाग में जिसका हम अध्ययन कर रहे हैं बार-बार इस्राएल की बात की, और हर बार उसके दिमाग में सांसारिक इस्राएल था। इसके अलावा यह प्रेरित स्पष्ट तौर पर आयत 25 में भौतिक इस्राएल की बात कर रहा था और आयत 25 पिछली आयत में आरम्भ हुए वाक्य को ही आगे बढ़ाना है। आयत 26 में ''इस्राएल'' की व्याख्या सांसारिक इस्राएल के रूप में करना स्वाभाविक लगता है।

यह फिर भी सवाल छोड़ देता है कि पौलुस के दिमाग में पूरा सांसारिक इस्राएल (रेखाचित्र में जिसका इस्तेमाल हम करते आ रहे हैं बड़ा चक्कर[10]) या ''इस्राएल के भीतर इस्राएल'' (देखें

9:6)। स्पष्टतया पौलुस के दिमाग में आयत 26 में सारा सांसारिक इस्राएल नहीं था। इसके अलावा यह कहना होगा कि ''सारा इस्राएल उद्धार पाएगा।''

फिर तो रोमियों 11:26 में ''इस्राएल'' की पहचान के तीन विचार सम्भव हैं: (1) आत्मिक इस्राएल (कलीसिया), (2) आम सांसारिक इस्राएल और (3) ''इस्राएल के अन्दर इस्राएल'' (''असली इस्राएली'' यानी वे यहूदी जिन्होंने यीशु को मसीहा मान लिया था)। मेरी प्राथमिकता दूसरा विचार है। परन्तु तीनों विचार तर्कसंगत हैं और इनमें से कोई भी परमेश्वर की प्रेरणा से दी गई, किसी शिक्षा का उल्लंघन नहीं है, इसलिए हम यकीन से नहीं कह सकते कि पौलुस के मन में क्या था। इन विचारों को थोड़े बहुत अन्तर के साथ एक ही मूल निष्कर्ष पर पहुंचने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है।

विचार करने की व्याख्या

जो कुछ कहा गया है उसे ध्यान में रखते हुए हम रोमियों 11:25, 26 की व्याख्या को मिलाने का प्रयास करते हैं, जो अध्याय 11 के पौलुस के कुल उद्देश्य यानी आसपास के संदर्भ और बाइबल की सामान्य अवधारणाओं से सहमत हो। पौलुस ने आरम्भ किया, ''... मैं नहीं चाहता कि तुम इस भेद से अनजान रहो, कि जब तक अन्यजातियां'' पूरी रीति से प्रवेश न कर लें, तब तक इस्राएल का एक भाग ऐसा ही कठोर रहेगा (आयत 25ख)। जैसा कि पहले सुझाव दिया गया है ''भेद'' का अर्थ है कि परमेश्वर द्वारा इस्राएलियों को अपने पास वापस लाने के लिए प्रेरित करने के लिए अन्यजातियों के ग्रहण किए जाने के ढंग को पौलुस द्वारा प्रकट करना है। ''कहीं ऐसा न हो, कि तुम [अन्यजातियां] अपने आप को बुद्धिमान समझ लो [घमण्डी (आयत 18) या अभिमानी (आयत 20) न हो]'' (आयत 25क)।

पौलुस ने फिर अपने मुख्य विचार पर आकर कहा: ''इस भेद ... तक इस्राएल का एक भाग ऐसा ही कठोर रहेगा'' (आयत 25)। ''इस्राएल'' सांसारिक इस्राएल (बड़ा चक्कर) है। ''एक भाग कठोर'' पढ़ने के बाद किसी इस्राएली को देखकर यह न सोचें कि वह ''एक भाग कठोर'' है बल्कि यह पूरी कौम के *एक भाग* कठोर होने का विचार है। RSV में है ''इस्राएल के भाग पर कठोरता आई है।'' आयत 7 में पौलुस ने कहा था, ''यह कि इस्राएली [बड़ा चक्कर] जिस की खोज में थे [परमेश्वर के साथ खड़े होना], वह उन को नहीं मिला; परन्तु चुने हुओं [छोटे चक्कर] को मिला, और शेष लोग [छोटे चक्कर के अलावा पूरा बड़ा चक्कर] कठोर किए गए हैं।''

''एक भाग कठोर'' तब तक रहना था ''जब तक अन्यजातियां पूरी रीति से प्रवेश न कर लें'' (आयत 25ग)। ''पूरी रीति'' यूनानी के उसी शब्द से लिया गया है, जिससे आयत 12 में ''भरपूरी'' (*pleroma*)।[11] मुझे हैरानी हुई कि आयत 12 के बजाय आयत 25 में *pleroma* के अलग-अलग अर्थ कितने लेखक, विद्वानों और अनुवादकों ने दिए हैं। इनमें से अधिकतर यह ज़ोर देते हैं कि आयत 25 में *pleroma* का अर्थ पूरी गिनती है।

यूनानी शब्दों के लिए अलग-अलग परिस्थितियों में अलग-अलग अर्थ होना सम्भव है, परन्तु जब तक किसी शब्द को अलग व्याख्या करने का मज़बूत तर्क न हो, तब तक किसी एक संदर्भ के भीतर आने पर उस शब्द का अर्थ एक ही होता है। यह निष्कर्ष निकालने का मुझे कोई

कारण पता नहीं है कि आयत 12 के बजाय आयत 25 में *pleroma* का इस्तेमाल इतनी अलग-अलग तरह से क्यों हुआ है। आयत 12 अध्ययन करते हुए हमने देखा था कि *pleroma* (''भरपूरी'') ''तोड़ना'' और ''असफलता'' से अलग था। हमने यह भी देखा कि आयत 12 आयत 15 के समानान्तर है, जो तोड़ने और असफलता (''परमेश्वर द्वारा ठुकराया जाना'') और भरपूरी (''परमेश्वर द्वारा स्वीकार किया जाना'') के परिणाम देता है।

रोमियों 11:12		रोमियों 11:15
गिरना, घटी	परमेश्वर को ठुकराना	ठुकराया जाना (परमेश्वर द्वारा)
भरपूरी	परमेश्वर को स्वीकार करना	स्वीकार किया जाना (परमेश्वर द्वारा)

आयत 12 में हमने निष्कर्ष निकाला था कि ''भरपूरी'' का अर्थ परमेश्वर के उद्देश्यों को यहूदियों द्वारा पूरा किया जाना है, जिसका परिणाम यह था कि परमेश्वर द्वारा उन्हें स्वीकार किया गया। यही मूल अर्थ आयत 25 के लिए उपयुक्त है: ''जब तक अन्यजातियां पूरी रीति से प्रवेश न कर लें, तब तक इस्राएल का एक भाग [बड़ा चक्कर] ऐसा ही कठोर रहेगा'' (आयत 25)। अध्याय 11 में पौलुस के तर्क की मुख्य रेखा के प्रकाश में आयत 25 को फिर से देखें:

यहूदियों का ठुकराया जाना (परमेश्वर द्वारा)
(''कठोर होना'')

↓

अन्यजातियों का ग्रहण किया जाना (परमेश्वर द्वारा)
(''भरपूरी'')

यदि पौलुस फिर से उद्धार के विषय में यहूदियों और अन्यजातियों के सम्बन्ध पर ज़ोर दे रहा था, तो फिर उसका अगला प्वाइंट क्या होना चाहिए? किसी तरह से उसे यह ज़ोर देना चाहिए कि अन्यजातियों की यह ''भरपूरी'' यहूदियों को ईर्ष्या लाने के लिए थी, ताकि वे मसीहा के बारे में अपने पुराने विचारों को छोड़ें और यीशु को स्वीकार कर उद्धार पाएं। क्या पौलुस ने ऐसा किया? आइए वचन में आगे देखते हैं।

आयत 26 ''और इस रीति से ...'' से आरम्भ होती है (आयत 26क)। ''इस रीति से'' शब्द *outos* से किया गया है। अंग्रेज़ी के ''सो'' शब्द की तरह *outos* क्रिया विशेषण का एक ढंग है, जिसका अर्थ ''इस तरह''[12] या ''इस तरीके से''[13] है। ''और इस रीति से'' यानी इस तरह से (परमेश्वर द्वारा अन्यजातियों को स्वीकार किए जाने के बाद) ''सारा इस्राएल [जलन के कारण मसीह को ग्रहण कर लेगा और इसलिए] उद्धार पाएगा।''

यहूदियों का ठुकराया जाना (परमेश्वर द्वारा)

(''कठोर होना'')

↓

अन्यजातियों का ग्रहण किया जाना (परमेश्वर द्वारा)
(''भरपूरी'')

↓

यहूदियों का ग्रहण किया जाना (परमेश्वर द्वारा)
(''सारा इस्राएल उद्धार जाएगा'')

मैं एक प्रश्न का अनुमान लगाता हूं: ''पर आपने, 'सारा' शब्द का अर्थ नहीं बताया। क्या 'सारा' शब्द अन्त में सब (या कम से कम अधिकतर) यहूदियों द्वारा यीशु को स्वीकार किए जाने की बात नहीं है?'' ज़रूरी नहीं है। यदि मैं यह कहूं, ''परमेश्वर ने सब को विश्वास करने, मन फिराने, स्वीकार करने, बपतिस्मा लेने की आज्ञा दी है; यह वह ढंग है जिससे सब लोग उद्धार पाएंगे?'' आप इससे यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि ''सब लोग बचाए जाएंगे''? नहीं, आपको मुझे इसका अर्थ समझाना होगा कि कोई उद्धार केवल तभी पा *सकता* है, जब वह परमेश्वर की दी हुई आज्ञा का पालन करता है।

कोई विरोध कर सकता है, ''पर रोमियों 11:25, 26 की व्याख्या तो पौलुस को अपनी बात अलग-अलग शब्दों में दोहराती लगती है रोमियों के अध्ययन में आप यह जाने बिना कि पौलुस ने बार-बार मुख्य शब्दों को क्यों दोहराया रोमियों के अध्ययन में उतनी दूर नहीं पहुंच सकते। इसलिए मुझे अध्याय 11 की 25 और 26 आयतों में पौलुस की मुख्य बात दोहराने की कोई दिक्कत नज़र नहीं आती।''

सारांश

रोमियों 11:25, 26 की ''ठूंठ'' से मैं ऐसे ही निपटता हूं। अन्यजातियों को परमेश्वर द्वारा ग्रहण किए जाने से, यहूदी लोग मसीह सुसमाचार फिर से ध्यान करके मसीही बनने का निर्णय लेकर बचाए जा सकते थे। उस पर ध्यान दें जो मैंने कहा है और देखें कि यह वचन की मांग को पूरा करता है या नहीं। फिर अध्ययन करने और प्रार्थना करने में लगे रहें और स्वयं अपने निर्णयों पर पहुंचें।

एक बार फिर हमें रोमियों के कठिन वचनों को समझने में दिक्कत आई है। परन्तु इस बात को समझ लें कि जितनी कठिन कोई आयत होगी उतना ही हमारे निजी उद्धार को कम प्रभावित करेगी। जो आयतें यह बताती हैं कि उद्धार पाने के लिए क्या करना है और मसीही जीवन कैसे जीना चाहिए, अधिकतर वे निष्कपट मनों के लिए स्पष्ट होती हैं और समझ आने वाली होती हैं। उसके लिए परमेश्वर को धन्यवाद दें।

प्रचारकों तथा सिखाने वालों के लिए नोट्स

सिखाने वाले या प्रचारक के रूप में *pleroma* के संज्ञा और क्रिया रूपों का इस्तेमाल रोमियों की पूरी पुस्तक में हुआ है (उदाहरण के लिए देखें 1:29; 8:4; 13:8, 10; 15:13, 14, 29) और ''निश्चित संख्या'' या ''एक ठहराई हुई संख्या'' की अवधारणा किसी में नहीं है। परन्तु कुछ लेखक इस ज़ोर के साथ कि ''परमेश्वर हर उस व्यक्ति का उद्धार करेगा जिसका उद्धार होना *चाहिए;* वह किसी एक को भी नहीं छोड़ेगा'' ''उद्धार पाने वालों की पूरी गिनती'' के लिए *pleroma* का इस्तेमाल करते हैं। मुझे *pleroma* को समझने के लिए इस असामान्य, गैरविवादी ढंग से कोई दिक्कत नहीं है।

टिप्पणियां

[1]कलीसिया की बहाली की आरम्भिक लहर के इतनी तेजी से फैलाव ने अमेरिका के कुछ लोगों को अत्याधिक आशावादी बना दिया। वे आसानी से मान सकते थे कि अन्यजाति और यहूदी दोनों की बड़ी संख्या के लोग निकट भविष्य में सुसमाचार की आज्ञा मानेंगे। [2]डब्ल्यू. ई. वाइन, मैरिल एफ. अंगर, एंड विलियम व्हाइट, जूनि., *वाइन'स कम्पलीट एक्सपोजिस्टरी डिक्शनरी ऑफ़ ओल्ड एण्ड न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स* (नैशविल्ले: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1985), 424. [3]विलियम हैंड्रिक्सन, *एक्पोज़िशन ऑफ़ पॉल'स एपिस्टल टू द रोमन्स,* न्यू टैस्टामेंट कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1982), 378. [4]इस पुस्तक में आगे ''प्रीमिलेनियम विचार'' चार्ट देखें। [5]यदि आप प्रीमिलेनियमलिज़्म पर गहन अध्ययन चाहते हैं, तो देखें *प्रकाशितवाक्य, 1* डेविड रोप, ''अच्छी शुरुआत मानों आधा काम पूरा हो गया।'' [6]हैंड्रिक्सन, 379. [7]लियोन मौरिस, *द एपिस्टल टू द रोमन्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988), 418; हैंड्रिक्सन, 379. [8]जिम्म मैक्गुइगन, *दि बुक ऑफ़ रोमन्स,* लुकिंग इन टू द बाइबल सीरीज़ (लब्बॉक, टैक्सस: मोंटेक्स पब्लिशिंग कं., 1982), 286-87. [9]साम्प्रदायिक तथा असाम्प्रदायिक कलीसियाओं के लेखकों की टीकाओं में ऐसा ही था। [10]यदि आपने इस पुस्तक में पहले आए पाठ ''यहूदी समस्या (9:1-13),'' के लिए चक्रों वाला चार्ट बनाया था तो आप यहां भी उसका इस्तेमाल कर सकते हैं।

[11]कुछ अनुवादों में रोमियों 11:12 और 11:25 दोनों में ''पूरी संख्या'' है। [12]सी. जी. विल्के एण्ड विलिबल्ड ग्रिम्म, *ग्रीक इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट,* अनु. एण्ड संशो. जोसेफ हैनरी थायर (एडिनबर्ग: टी. एण्ड टी. क्लार्क, 1901; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1977), 468; हैंड्रिक्सन, 379. NCV में ''ऐसे ही'' है जबकि SEB तथा मैकॉर्ड में ''इस प्रकार से'' है। [13]एफ. एफ. ब्रूस, *दि लैटर ऑफ़ पॉल टू द रोमन्स,* दि टिंडेल न्यू टैस्टामेंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1985), 209; मौरिस, 420.

एक प्रीमिलेनियम विचार